फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर **255** *1/-* *सितम्बर* **2009**

एक मजदूर : " दस्त लगे हैं फिर भी ड्युटी जा रहा हूँ। मजबूरी है। एक दिन की दिहाड़ी और उपस्थिति भत्ता कटना दस्त की तकलीफ– कमजोरी से भारी पड़ेंगे।"

रफ्तार और स्वास्थ्य (2)

जल्दी का आज बोलबाला है। गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति का महिमामण्डन सामाजिक पागलपन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। थल, जल, नभ और इन सब के पार अन्तरिक्ष तथा अन्तरिक्ष से भी परे के लिये तीव्र से तीव्रतर वाहनों का निर्माण आज मानवों की प्रमुख गतिविधियों में है। शीघ्र तैयार होती फसलें और पशु- पक्षियों का माँस जल्दी बढाना आम बात बन गये हैं।.... मानव अपने स्वयं के शरीरों की रफ्तार बढाने में जुटे हैं। और, मस्तिष्क की गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति ने मुक्ति- मोक्ष का आसन ग्रहण कर लिया है।

प्रकृति के पार जा कर हम गति के उत्पादन में जुट गये हैं। रफ्तार की कई किस्में हैं। हर प्रकार की गति का उत्पादन एक अनन्त तांडव है। रफ्तार बढाना तांडवों की वीभत्सता बढाना लिये है। गति के उत्पादन पर विचार करने की अति आवश्यकता को महसूस करने के लिये स्वास्थ्य पर पड़ते रफ्तार के प्रभावों के कुछ पहलू देखें। यहाँ कुछ बातें मानसिक स्वास्थ्य की।

★ निर्णय लेना। कई निर्णय लेना। प्रतिदिन अनेक प्रकार के अनेक निर्णय लेना। यह प्रत्येक की आज जीवनचर्या बन गई है। हर क्षेत्र में गति, तीव्रतर गति शीघ्र निर्णय को क्षण के विभाजन (अंग्रेजी में स्प्लिट सैकेण्ड) के चरण में ले आई है। और गति बढ रही है....

अनगिनत चीजें आपस में जुड़ी हैं। और, गतिशील हैं। किसी भी समय एक अत्यन्त अस्थिर संतुलन बनता है। ऐसे में व्यक्ति हो चाहे संस्थान, निर्णय तुक्के की श्रेणी में आते हैं। इसलिये स्पष्टीकरणों की भरमार रहती है।

यह गति, तीव्रतर गति द्वारा रची-बुनी सामाजिक हालात हैं कि प्रत्येक को प्रतिदिन हजारों निर्णय करने होते हैं। ऐसे में आशा और निराशा का स्थान अति आशा और अति निराशा ने ले लिया है। कभी-कभार की बजाय प्रत्येक एक ही दिन में कई-कई बार इन दो अतियों के बीच झूलता-झूलती है। एक तरफ " मैं ही बेवकूफ हूँ " तो दूसरी तरफ " मेरे सिवा सब पागल हैं " दो छोर बने हैं।

गति, तीव्रतर गति ने सूचनाओं-जानकारियों की बाढ ला दी है। व्यक्ति को कुछ का ही पता रहता है, कुछ को ही ध्यान में रख सकती है। और फिर आंकलन, तुलनात्मक आंकलन, महत्व के प्रश्न। जल्दी-जल्दी हजारों फैसले रोज लेने की मजबूरियाँ ही हैं कि "गलती किस से नहीं होती?" आज इतना प्रचलित वाक्य है। परन्तु बात इतनी ही नहीं है।

निर्णय-दर-निर्णय। तुक्के-दर-तुक्के। गलतियाँ-दर-गलतियाँ। आज की यह अनन्त प्रोसेस प्रत्येक को प्रतिदिन अनेक भूमिकाओं में धकेलती है। रोज ही हम अनेक मुखौटे लगाने को अभिशप्त हैं। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति अनेक व्यक्तित्वों का अखाड़ा बना है। एक "मैं" में पचासों "मैं" हैं। और, ज्ञानी लोग व्यक्तित्व में एक विभाजन को मनोरोग कहते हैं।

★ बच्चे जल्दी बड़े हों। यानी, वर्तमान में गति की तीव्रता के अनुरूप बच्चे स्वयं को शीघ्र ढालें। विद्यालय। मस्तिष्क की गति बढायें। परिणाम है दस वर्ष के बच्चों में भी चिड़चिड़ापन, सुस्ती व उदासी .....आत्महत्या तक।

मानसिक रोगों ने महामारी का रूप ले लिया है। ऐसे में मनोचिकित्सकों में एक प्रवृति यह भी उभरी है कि 15 प्रतिशत मानसिक रोगों को मनोरोग मानना ही बन्द करो।

भारत में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य प्रोग्राम का आंकलन है कि भारत में 10-20 प्रतिशत आबादी मानसिक रोगी है। चिकित्सकों के अनुसार भारत में 50-60 प्रतिशत लोग मनोरोगी हैं। स्वयं डॉक्टरों में आधे से अधिक रोगी हैं और 6-7 प्रतिशत तो गम्भीर रूप से मनोरोगी हैं। भारत में तीव्रतर गति के व्यापक ताण्डव को अधिक समय नहीं हुआ। यूरोप-अमरीका-आस्ट्रेलिया में गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति की उपज ***अकेलापन*** की भयावहता का अन्दाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि अन्य विषयों के विशेषज्ञों पर अनेक पाबन्दियाँ लगाती यूरोप-अमरीका-आस्ट्रेलिया की सरकारों ने भारत से मनोचिकित्सकों के लिये दरवाजे पूरे खोल रखे हैं।

★ अकेलापन। भीड़ में अकेलापन। यह तीव्र से तीव्रतर गति की विशेष फसल है, खास उपज है।

आज कामकाजी रिश्तों का बोलबाला है। और, इतनी तेजी के होते हुये भी कामकाजी सम्बन्धों के लिये भी किसी के पास पर्याप्त समय नहीं है। वैसे, यह कहना बनता है कि गति इतने काम पैदा कर देती है – बढा देती है कि समय कम पड़ता है। ऐसे में आमतौर पर " समय नहीं है " का रोना कामकाजी रिश्तों के लिये समय कम पड़ने का रोना होता है।

जबकि, कामकाजी रिश्तों से परे वाले सम्बन्ध ही वह सम्बन्ध हैं जो जीवन को रस देते हैं, जीवन्तता प्रदान करते हैं। कामकाजी रिश्तों में परिचित बनते हैं और इन से परे वाले सम्बन्धों में..... मित्र-दोस्त-फ्रैन्ड बनते हैं (शब्दों के अर्थों में भारी उलट-फेरें हुई हैं और परिचित को मित्र कहना चलन में है फिर भी मजबूरी में यह शब्द पुराने अर्थ में यहाँ प्रयोग किये जा रहे हैं)।

किसी भी सम्बन्ध के लिये समय प्राथमिक आवश्यकता है। आज कामकाजी रिश्ते ही सब समय हड़प रहे हैं। इसलिये परिचित बहुत हैं, दोस्त शायद ही कोई। यह स्थिति मानसिक रोगों का एक आधार तो बनती ही है, यह मनोरोगों के उपचार को असम्भव भी बना देती है।

★ थोड़ा मुड़ कर देखें। डर, गुस्सा, असहायता, जलन, कुंठा, लालच व्यापक थे। परन्तु फिर भी मानसिक रोगों को रोकने, उनका उपचार करने के लिये झाड़-फूंक, मन्दिर-दरगाह-थान के अलावा एक प्रकार की सामाजिकता भी थी। रफ्तार, बढती रफ्तार उसे पूरी तरह निगल गई है अथवा उसका बाजारीकरण कर दिया गया है।

उपमहाद्वीप में इन सौ वर्षों में व्यक्ति की मृत्यु पर उससे सम्बन्धित गतिविधियों का एक महीने से 13 दिन, फिर 3 दिन और अब एक घण्टे की होना। एक महीने की होली 6-8 घण्टे की हो गई है। सावन का महीना दो दिन का बन गया है – तीज का दिन और रक्षाबन्धन का दिन। ब्रज में भी कृष्ण जन्माष्टमी से बलदेव छठ वाला 20 दिन का भादों मास मात्र जन्माष्टमी रह गया है। दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, रामनवमी, गरबा, ओणम, बिहू, दिवाली का बाजारीकरण वीभत्स रूप ग्रहण कर चुका है। दादा, नानी, दोस्त, गली-मोहल्ले के रिश्ते अब गायब हो रहे हैं और निजता-प्राइवेसी की माँग मुखर हो रही है।

इसलिये भारत में भी मानसिक रोगों का उपचार एक बहुत बड़ा धन्धा बनने की राह पर है।

★ गति की पहली दस्तक आमतौर पर सेना में होती है। गति और दूर-दूर प्रस्थान व निवास स्थाई सेना को मानसिक रोगों के लिये उपजाऊ स्थान बनाते हैं। उपमहाद्वीप की ही बात करें तो पहला पागलखाना 1787 में कोलकाता में खोला गया था। फिर 1794 में चेन्नई में, 1795 में रांची में, 1806 में मुम्बई में, 1858 में आगरा में, 1862 में

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये, छूट है कानून से परे शोषण की

01.07.2009 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3914 रुपये (8 घण्टे के 151 रुपये); अर्धकुशल अ 4044 रुपये (8 घण्टे के 156 रुपये); अर्धकुशल ब 4174 रुपये (8 घण्टे के 161 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4304 रुपये (8 घण्टे के 166 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4434 रुपये (8 घण्टे के 171 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4564 रुपये (8 घण्टे के 176 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लियें कुछ पते : 1. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार 30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ 2. श्रीमान मुख्य मन्त्री, हरियाणा सरकार हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

अरिहन्त मैक इन्डस्ट्रीज मजदूर : "15 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हम मजदूरों के पीने के लिये खारा पानी रहता था। तीसरी मंजिल पर दफ्तर में पीने जाते तो मना कर देते। जून के आरम्भ में एक दिन हम सब ने तय किया कि खारा पानी नहीं पीयेंगे और काम बन्द कर फैक्ट्री से निकलने लगे..... फोरमैन ने रोका और तब से टैंकर का मीठा पानी घड़ों में भरते हैं। हैल्परों की तनखा 2300-2400, ऑपरेटरों की 3000, डाई सैटर की 4000 और डाई मेकर की 5000 रुपये थी। जनवरी से साहब कह रहे थे कि बढायेंगे-बढायेंगे। जुलाई की तनखा 13 अगस्त को देने लगे तो किसी मजदूर ने नहीं ली और तब सब के 500-500 रुपये बढाये। अरिहन्त मैक के टूल रूम में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है और बाकी विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। महीने में 10-12 बार तो लगातार 36 घण्टे ड्युटी। ओवर टाइम के महीने में 340 घण्टे तक हो जाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। साप्ताहिक छुट्टी नहीं — रविवार को सुबह 6 से दोपहर 2½ तक ड्युटी के दुगुने पैसे देते हैं पर नहीं जाओ तो कोई पैसे नहीं। कम्पनी 12 घण्टे में 2 समोसे देती है और 36 घण्टे लगातार पर 20 रुपये रोटी के। वाहनों के शॉकर, एक्सल, स्प्रिंग,हुडलॉक 200 मजदूर बनाते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 7-8 की ही हैं। पावर प्रस 20 हैं — रोज 12 घण्टे, लगातार 36 घण्टे चलाते हैं, हैल्परों से भी चलवाते हैं। हाथ कटने पर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. करवाते हैं। प्रतिदिन 2-3 गाडी माल ***जय भारत मारुति*** जाता है। ***इण्डिया फोर्ज*** और ***अरिहन्त इंजिनियरिंग*** को भी माल जाता है। पीस खराब होने पर महीने में 200-500 रुपये काट लेते हैं। मात्र एक शौचालय है, गन्दा रहता है, लाइन लग जाती है।"

ध्रुव ग्लोबल श्रमिक : " 14 मील पत्थर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***नोर्थ स्टोर्म, न्यू यार्क, कैजुअल मेल, बासप्रो, सी ए जी*** के परिधान तैयार किये जाते हैं। रविवार को भी 12-12 घण्टे ड्युटी, जन्माष्टमी की भी छुट्टी नही। ओवर टाइम सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 1800-2200 रुपये तथा सिलाई कारीगर पीस रेट पर और इन 600-700 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूर 800 के करीब हैं और इन्हें 8 की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। स्टाफ की तनखा मार्च में बढानी थी पर जुलाई तक नहीं बढाई है। आयकर विभाग ने 20 अगस्त को फैक्ट्री पर छापा मारा......"

न्यू रणधीर प्रेस टूल्स कामगार : "प्लॉट 365 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***महिन्द्रा ट्रैक्टर*** के पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से और जून व जुलाई के पैसे आज 13 अगस्त तक नहीं दिये हैं। तनखा भी देरी से देते हैं। पाँच-सात पुराने वरकरों की तनखा 4000-5000 रुपये है और इन्हीं की ई. एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। भोजन अवकाश का समय तय नहीं। पीने का पानी ठीक नहीं, बीमार पड़ते हैं। पुरुष मजदूरों के लिये शौचालय एक ही है, बहुत गन्दा रहता है। महिला मजदूरों के लिये शौचालय है पर ताला बन्द रहता है और उन्हें फैक्ट्री की बगल में रेलवे लाइन पर जाना पड़ता है। एक कप चाय भी 12 घण्टे में नहीं देते। साहब गाली देते हैं।"

फरीदाबाद बोल्ट टाइट वरकर : " प्लॉट 63 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 3000-4000 रुपये। ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 84 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 16-20 घण्टे तक जबरन रोक लेते हैं। तनखा हर महीने देरी से, 18-20 तारीख को।"

डायनैमिक इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "प्लॉट 5 सी सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। हैल्परों की तनखा 3000 रुपये और कारीगर पीस रेट पर तथा ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

आर एस इन्टरप्राइजेज कामगार : "गुरुकुल इन्डस्ट्रीयल एरिया, अनंगपुर स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000 और ऑपरेटरों की 3000-3400 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 40 मजदूरों में 7 की ही।"

गोरोरी इण्डिया वरकर : " प्लॉट 44 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं।"

नीलकंठ थर्मोपैक मजदूर : " प्लॉट 37 कृष्णा कॉलोनी गली नं.1, सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2900 और ऑपरेटरों की 3500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 25 में 5 की ही। शिफ्ट सुबह 8½ से रात 7½ की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध है ही नहीं, घर से ले जाते हैं। शौचालय भी नहीं है, नहर पर जाना पड़ता है।'

जी एल ऑटो पार्ट्स श्रमिक : "14 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा, यामाहा*** दुपहिया वाहनों के पुर्जे बनाते हैं। रविवार को भी काम। महिला व पुरुष हैल्परों की तनखा 2000-2200 और ऑपरेटरों की 2700-3300 रुपये। कुछ को चुपचाप 200-300 रुपये अलग से देते हैं और यहाँ 14-15 वर्ष के लड़के भी काम करते हैं। सीनियर वरकर काम करवाते हैं और कम्पनी ने लाखों रुपये कर्ज दे कर उनकी वर्कशॉप खुलवा रखी हैं जहाँ कम्पनी का काम होता है। ई.एस. आई. व पी.एफ. 700 में 75 के ही हैं। बारह घण्टे बाद जबरन रोक लेते हैं, गाली देते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, 15 तारीख के बाद।"

क्लच ऑटो कामगार : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा 17 अगस्त को देनी आरम्भ की।"

न्यू हिन्दुस्तान ट्युब्स वरकर : " प्लॉट 91 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। शिफ्ट सुबह 6 से रात 8-9 की। ओवर टाइम सिंगल रेट से। हाँ, भोजन के लिये 30 रुपये और दो बार चाय-मट्ठी देते हैं।"

एस. जे. इंजिनियरिंग मजदूर : " प्लॉट 352 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में मई, जून और जुलाई की तनखायें आज 19 अगस्त तक नहीं दी हैं।"

सुपर फाइबर श्रमिक : "57 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित जूट मिल में जून की तनखा 30 जुलाई को जा कर दी और जुलाई का वेतन आज 18 अगस्त तक नहीं दिया है। दस घण्टे की एक शिफ्ट है, ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

माइकरो मशीन्स कामगार : " 101 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***ग्रेजियेनो***, नोएडा के पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। ई. एस.आई. व पी.एफ. 50 में 3-4 की ही।"

सैनलूम इन्डस्ट्रीज वरकर : "35 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी की दिक्कत।"

रिलायेबल डीजल मजदूर : " 12-6 अनंगपुर रोड़, गुरुकुल इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित कम्पनी की दूसरी यूनिट में मजदूर मामूली-सी समस्या के समाधान का अनुरोध करते हैं तब भी साहब लोग दुर्व्यवहार करते हैं।"

वी जी इन्डस्ट्रीयल श्रमिक : "31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट आरम्भ होने से 15 मिनट पहले बुलाने लगे हैं। सुपरवाइजर बदतमीजी से पेश आते हैं।"

के पी टूल्स कामगार : "ईदगाह कॉलोनी, सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 3400-4000 रुपये।"

डुडेजा इन्डस्ट्रीज वरकर : " इन्डस्ट्रीयल एरिया में व्हर्लपूल के सामने स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर ***व्हर्लपूल फ्रिज*** के केबल बनाते हैं। तनखा 2200-2500 रुपये।"

गुड़गाँव में मजदूर

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : "198 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हर रोज सुबह 9 से रात 11 की ड्युटी – धागा कटिंग और पैकिंग विभागों में सुबह 8 से रात 11 तक। गेट बन्द कर देते हैं। महिला मजदूरों को इससे भारी परेशानी होती है। फैक्ट्री में 600 महिला तथा 1000 पुरुष मजदूर हैं – पुरुषों को रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। कम्पनी 14-17 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती। महिला मजदूरों को भी बहुत गाली देते हैं। जाँच वाले 28 जुलाई को आये तो परसनल वाले बोले कि महीने में 10-12 घण्टे ओवर टाइम बताना.... जबकि होता 150 घण्टे से ज्यादा है। मखमल की सिलाई में गर्द बहुत उड़ती है, पिछले साल इसके लिये गुड़ देते थे पर इस वर्ष बन्द कर दिया – जाँच वालों के आने के दिन, 28 जुलाई को ही गुड़ दिया। कार्ड पंच के लिये मात्र 3 मशीन हैं – 15 मिनट लग जाती हैं। दो दिन छुट्टी करने पर कार्ड रोक लेते हैं। गौरव इन्टरनेशनल की 208 फेज-1 और 506 फेज-3 स्थित फैक्ट्रियों में भी साहब लोग गाली देते हैं।"

के आर एफ श्रमिक : "403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में धागों की रंगाई, सिलाई के धागे तथा लेबल बनाने का कार्य करते हैं। रविवार को भी कार्य। महीने में 125-150 घण्टे ओवर टाइम के पर 60-70 घण्टे के ही पैसे देते हैं और वह भी सिंगल रेट से। एतराज पर गाली देते हैं। नये हैल्परों की तनखा 2200 और पुरानों की 2500 रुपये, जबकि पुरानों से हस्ताक्षर 3840 पर करवाते हैं। एक ऑपरेटर से दो मशीनें चलवाते हैं और तनखा 2500-3000 रुपये देते हैं पर हस्ताक्षर 4100 पर करवाते हैं। एक छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काट लेते हैं। ई.एस.आई. व पी. एफ. 500 मजदूरों में 200 के ही हैं।"

विशेष ओवरसीज कामगार : "430 उद्योग विहार फेज-4 स्थित विशाल फैक्ट्री में महीने में 100 घण्टे से अधिक ओवर टाइम – 50 घण्टे का दुगुनी दर से भुगतान करते हैं और बाकी का सिंगल रेट से। नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये बहुत परेशान करते हैं – जून व जुलाई में छोड़ने वालों का भुगतान आज 29 अगस्त तक नहीं किया है।"

सीकल एक्सपोर्ट वरकर : "775 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2700-3000 रुपये तथा सिलाई कारीगर पीस रेट पर और रेट पहले नहीं बताते। शौचालय का गेट 11 से 11¼, फिर 1 से 1½, और फिर 4 से 4¼ ही खोलने के कारण बहुत दिक्कत होती है।"

मोडलामा मजदूर : " 200 व 201 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जुलाई माह में सुबह 8½ शिफ्ट आरम्भ होती थी। जुलाई में चारों रविवार भी फैक्ट्री में उत्पादन कार्य हुआ। हाफ नाइट, यानी, रात 2 बजे तक जुलाई में 28 रोज काम हुआ। फुल नाइट में सुबह 8½ से अगले रोज सुबह 6 तक कार्य। हाफ हो चाहे फुल नाइट, रोटी के लिये मात्र 20 रुपये। कम्पनी में ***गैप*** का माल बना। जुलाई ओवर टाइम के पैसे 25 अगस्त को दिये तो हर मजदूर के 500-1000 रुपये यह कह कर काट लिये कि ओवर टाइम ज्यादा हो गया!! प्लॉट 105 और 204 फेज-1 वाली मोडलामा फैक्ट्रियों में भी यही बातें। इधर अगस्त में शिफ्ट सुबह 9½ आरम्भ होती है...... एक लड़के ने 10 दिन लगातार सुबह 9½ से अगले रोज सुबह 6 तक ड्युटी की। सुबह 6 बजे छूट कर फिर 9½ से काम करना। एक फेंके टुकड़े को सिर पर बाँधने के लिये लेने पर उस मजदूर पर चोरी का आरोप लगा कर उसे नौकरी से निकाल दिया और किये काम के पैसे नहीं दिये।"

मधु चावला डिजाइन ट्रैन्ड श्रमिक : " 783 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर थे, अब 50 हैं। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। हैल्परों की तनखा 2800-3000 रुपये और कारीगरों को 8 घण्टे के 140 रुपये।"

कुरुबॉक्स लैदर कामगार : " 199 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा आज 29 अगस्त तक नहीं दी है।"

लोगवैल फोर्ज वरकर : "116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, रविवार को रात की 12 घण्टे की शिफ्ट ही। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

स्पार्क मजदूर : " 166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में तनखा हर महीने देरी से – जुलाई का वेतन 20 अगस्त को दिया। तनखा तथा ओवर टाइम की राशि में हर महीने 400-500 रुपये की गड़बड़ करते हैं। नौकरी छोड़ने पर किये काम के आधे पैसे तक नहीं देते। एतराज पर साहब गाली देते हैं। महिला मजदूरों से बदतमीजी करते हैं। धागे काटने वाले मजदूरों की तनखा 2500 रुपये पर बाकी सब को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। तनखा से ई.एस. आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म भरते ही नहीं। स्टाफ ही कम्पनी ने स्वयं भर्ती किया है, 300 मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं। कैन्टीन नहीं, पीने के पानी की दिक्कत रहती है, और 300 लोगों के लिये मात्र एक शौचालय है।"

आई टी सी श्रमिक : " 86 उद्योग विहार फेज-1 स्थित ***लाइफ स्टाइल रीटेलिंग बिजनेस डिविजन*** में आई टी सी कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये 150 मजदूर रखे हैं। मुख्य ठेकेदारों में एक तो मजदूरों के 5 वर्ष पूरे होने ही नहीं देता और बिना कोई हिसाब दिये निकाल देता है। जबकि, दूसरी ठेकेदार कम्पनी 5 वर्ष पूरे होते ही एक महीने की नोटिस पे तथा 15 दिन प्रतिवर्ष की ग्रेच्युटी दे कर निकाल देती है। यहाँ सैम्पलिंग टेलर ***जोहन कलीयर, विल्स क्लासिक, विल्स एक्सपोर्ट, मिस पिलियर , क्लब लाइफ*** के सैम्पल तैयार करते हैं जबकि इनका उत्पादन कार्य बेंगलुरु, लुधियाना, नेपाल आदि में होता है।"

दिल्ली में... *(पेज चार का शेष)*

से बाहर निकल गये! और फिर एक नेता टपका जिसने फौरन ड्युटी पर रखवाने अथवा तत्काल बढिया हिसाब के जाल में 21 मजदूरों को फाँस लिया। पर फिर भी 5 मजदूर नौकरी छोड़ने को तैयार नहीं हुये। मजदूरों को आपस में भिड़ा कर नेता ने इनकार करने वालों को अलग से कहा कि तुम्हें और ज्यादा पैसे दिलाऊँगा। नेता के कहने पर 22 अगस्त को 21 मजदूर हिसाब लेने फैक्ट्री पहुँचे। नेता के आने में देरी पर मजदूरों ने नेता को फोन किया और मोबाइल का माइक चालू कर आवाज बढा दी ताकि सब मजदूर बातचीत सुन सकें। इनकार करने वालों का फोन समझ कर नेता जी बोले कि चिन्ता मत करो, 21 को जाने दो, फिर तुम्हें बढिया हिसाब दिलाऊँगा। यह सुन कर 21 मजदूर सन्न रह गये। फिर बात समझ में आई और नेता को खरी-खरी सुना कर 21 मजदूर अपने 5 साथियों से मिल गये। इफ्टू यूनियन के जरिये 26 मजदूर श्रम विभाग में कार्रवाई जारी रखे हैं।"

बुटीक इन्टरनेशनल वरकर : "डी-80 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागे काटने वाली महिला मजदूरों की तनखा 2400-2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। बाकी मजदूरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर नौकरी छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म भरते ही नहीं। इधर ओवर टाइम बहुत कम है पर सितम्बर से मार्च के दौरान हर महीने 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में पीने के पानी की दिक्कत। पाँच सौ मजदूरों के लिये मात्र दो शौचालय हैं।"

बालाजी होजरी उद्योग मजदूर : " एक्स-39 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं।"

रफ्तार और स्वास्थ्य

(पेज एक का शेष)

बरेली में पागलखाने बनाये गये। यह सब पागलखाने छावनियों के निकट बनाये गये थे। पहले इन पागलखानों में यूरोप में जन्मे मनोरोगी सैनिकों को रखा जाता था और फिर मानसिक रोग से ग्रस्त भारत में जन्मे सिपाहियों को भी। मनोरोगियों को पागलखानों में बन्द करने का कानून 1858 में बना और यह जेल अधीक्षकों के तहत थे – 1920 में इनके नाम में चिकित्सालय शब्द लाया गया और यह डॉक्टरों के तहत हुये।

सेनाओं के बाद गति का अगला अखाड़ा आमतौर पर उत्पादन क्षेत्र बनता है। डेढ-दो सौ वर्ष पूर्व की गति तथा परिजनों से दूर निवास सैनिकों को मनोरोगी बना रहे थे। आज मजदूर उससे बहुत अधिक गति तथा परिजनों से दूर बदतर निवास स्थानों पर रहते व कार्य करते हैं। मजदूरों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में....... क्या कहें?

और, बूढ़ों में मानसिक रोगों की स्थिति.... यह बात ही मत करो! (जारी)

डाक विभाग

ई डी कर्मचारी : " भारत सरकार द्वारा डाक विभाग के सवा तीन लाख कर्मचारी एक्स्ट्रा डिपार्टमेन्टल (ई डी) कहे जाते हैं। हम ई डी कर्मचारियों को छठे वेतन आयोग से कुछ भी नहीं मिला है। इस समय हमारी तनखा मात्र 3200-3300 रुपये है। संसद के लिये चुनाव से पहले आश्वासन दिये थे कि हमें विभागीय कर्मचारी मान लिया जायेगा और वेतन बढाया जायेगा। चुनाव हुये और सरकार बने काफी समय हो गया है पर हम ई डी कर्मचारियों की स्थिति जस की तस है।"

हरियाणा रोडवेज

चालक : " जून तथा जुलाई 08 में हरियाणा सरकार ने कर्मचारी चयन बोर्ड के जरिये राज्य परिवहन में 810 चालक तथा 1200 परिचालक भर्ती किये। नये भर्ती को एस पी एल कहा गया और अब ड्राइवर की तनखा 4200 तथा कण्डक्टर की 3900 रुपये है। जबकि, नियमित चालक-परिचालक की तनखा छठे वेतन आयोग के पश्चात 15 हजार रुपये के आसपास है। नियमित चालक-परिचालकों ने 13 जुलाई 09 को प्रबन्धन को ज्ञापन दिया जिसमें एस पी एल ड्राइवर-कण्डक्टरों को नियमित करने की माँग भी थी। सरकार द्वारा माँगें नहीं माने जाने पर 13 अगस्त को दोपहर 12 से 2 बजे हरियाणा रोडवेज की सब बसें रोकी गई। दो घण्टे बसें रोकने में परमानेन्ट के संग हम एस पी एल ड्राइवर-कण्डक्टर भी शामिल हुये।"

जम्मु-कश्मीर राज्य परिवहन

पाँच महीनों की तनखायें बकाया हो जाने पर जम्मु-कश्मीर राज्य परिवहन निगम के 4500 कर्मचारियों ने 18 अगस्त से श्रीनगर में प्रतिदिन प्रदर्शन करना आरम्भ किया। पाँच महीनों की तनखाओं के लिये प्रदर्शनों के पन्द्रहवें दिन, 1 सितम्बर को 4500 परिवहन कर्मचारियों के संग उनके परिजन भी प्रदर्शन में शामिल हुये। पानी की बौछारों, आँसू गैस गोलों और लाठी चार्ज से पुलिस ने कई प्रदर्शनकारी घायल किये और 1500 को गिरफ्तार किया।

सुरक्षा कर्मी

गार्ड : " सी टी -3/3 न्यू मोती नगर, नोएडा में कार्यालय वाली ***जेनिथ सेक्युरिटी*** कम्पनी हम गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 3200 रुपये देते हैं।"

दिल्ली में मजदूर

1 अगस्त से देय डी. ए. की घोषणा दिल्ली सरकार ने सितम्बर के आरम्भ तक नहीं की थी।

बसन्त इण्डिया मजदूर : " जी-4, बी-1 एक्सटैन्शन, मोहन को-ऑप इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री में तनखा में देरी और ओवर टाइम भुगतान में बहुत देरी के विरोध में 90 मजदूरों ने 17 जुलाई को काम बन्द किया तब मैनेजमेन्ट ने मार्च व अप्रैल में किये ओवर टाइम के पैसे दिये थे। इधर जुलाई की तनखा 20 अगस्त तक नहीं दी तो कुछ महिला मजदूर तनखा माँगने साहबों के पास गई। इस पर मैनेजमेन्ट ने तुरन्त 3 महिला मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। आज 24 अगस्त तक जुलाई की तनखा नहीं दी है और मई-जून-जुलाई में करवाये ओवर टाइम के पैसे भी नहीं दिये हैं।"

यूनिस्टाइल श्रमिक : " बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जून माह में सिलाई कारीगरों ने तीन दिन काम बन्द कर ***एलिजा*** के टी-शर्ट का पीस रेट 28 की जगह 37 रुपये करवाया था। एक ठेकेदार ने 25 सिलाई कारीगरों को 37 रुपये अनुसार पैसे दे दिये पर दूसरा ठेकेदार पूरे भुगतान के समय 23 जुलाई को 21 सिलाई कारीगरों को 35 के हिसाब से पैसे देने लगा तो मजदूरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। उस समय फैक्ट्री में काम नहीं था इसलिये 21 सिलाई कारीगरों ने एक यूनियन नेता के जरिये श्रम विभाग में शिकायत की। उत्तर में ठेकेदार ने सिलाई कारीगरों को पीस रेट पर रखने की बजाय 5500 रुपये तनखा पर रखे बताया। मजदूरों ने 3 वर्ष से अधिक समय से यूनिस्टाइल फैक्ट्री में लगातार काम करने के सबूत दिये तो ठेकेदार ' दो महीने से' की जगह 'वर्ष-भर से' पर आया। श्रम विभाग में कार्रवाई के संग कारीगर फैक्ट्री में जाते रहे पर काम नहीं होने के कारण खाली बैठते। जुलाई की तनखा 7 अगस्त को देने की बात फिर 10 की बात परन्तु 17 अगस्त तक नहीं दी। ऐसे में ***सैमसंग*** के टी-शर्ट का काम आया तो ठेकेदार ने काम आरम्भ करने को कहा और मजदूरों ने पहले जुलाई की तनखा देने की शर्त रखी। इस पर 22 अगस्त को 21 सिलाई कारीगर फैक्ट्री से बाहर कर दिये गये। श्रम विभाग में तारीखें जारी हैं।" ***(बाकी पेज तीन पर)***

वीयर वैल कामगार : "बी-134 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 8 अगस्त को 5 स्थाई मजदूरों का गेट रोक कर उन्हें इस्तीफे लिख कर बना कर रखा हिसाब लेने को कहा। मजदूरों ने इस्तीफे लिखने से इनकार कर दिया। फैक्ट्री के अन्दर 125 स्थाई मजदूरों ने मैनेजमेन्ट की इस हरकत का विरोध किया। इस पर 21 अन्य स्थाई मजदूर बाहर कर दिये गये। मजदूरों ने इफ्टू यूनियन के जरिये श्रम विभाग में शिकायत की। कम्पनी के पास कोई उत्तर नहीं। ऐसे में कम्पनी ने 18 अगस्त को श्रम विभाग में 26 स्थाई मजदूरों को पत्र दिये कि वे 8 अगस्त को जबरन फैक्ट्री

विचारणीय

परमाणु बिजलीघर

[परमाणु बिजलीघर एटम बमों से अधिक खतरनाक व प्रदूषणकारी हैं पर प्रचार तन्त्र इन्हें ऊर्जा के सुरक्षित व बिना प्रदूषण वाले स्रोत प्रचारित करता है। इस सन्दर्भ में हम 'न्यूज एण्ड लैटर्स' के अगस्त-सितम्बर 09 अंक से कुछ जानकारियाँ यहाँ दे रहे हैं।
सम्पर्क : News & Letters, 228, South Wabash, Suite 230, Chicago, IL 60604, U.S.A.
ई-मेल <arise@ newsandletters.org>]

1952 से 2000 के दौरान विश्व-भर में परमाणु बिजलीघरों में 34 तबाही मचाने वाले एक्सीडेन्ट हुये। अमरीका के पेनसिलवेनिया प्रान्त में थ्री माइल आइलैण्ड परमाणु बिजलीघर 1979 में महाविनाश के कगार पर पहुँच गया था। रूस में 1986 में चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर ने महाविनाश किया। रूस, यूकरेन और बेलारूस में एक लाख वर्ग मील क्षेत्र में बहुत भारी तबाही, कई पीढियों तक तबाही.....

प्रत्यक्ष अनुभवों ने ठिठका दिया। नये परमाणु बिजलीघर बनाना थम गया। विश्व-भर में परमाणु बिजली उद्योग का विस्तार रुक गया। लेकिन सन् 2001 से अमरीका सरकार ने अमरीका में तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों में परमाणु बिजलीघरों का निर्माण पुनः आरम्भ करने की वकालत शुरू की हुई है।

अमरीका सरकार के पास 26 परमाणु बिजलीघर बनाने के लिये 17 आवेदन पहुँचे हैं। अमरीका सरकार की विदेश मन्त्री ने हाल ही की यात्रा में भारत में दो परमाणु बिजलीघर बनाने के लिये भारत सरकार से सौदा किया। ईंधन, यूरेनियम के खनन के लिये भी कई आवेदन अमरीका सरकार को मिले हैं। परमाणु बिजलीघरों का निर्माण करने वाली कम्पनियों को 93 हजार 5 सौ करोड़ रुपये कर्ज दिलाने के लिये अमरीका सरकार जमानती बनेगी।

यूरेनियम के खनन की कोई सुरक्षित प्रणाली नहीं है। यूरेनियम खदानों के क्षेत्र में पैदा होने वाले शिशु जन्म से विकार-ग्रस्त होते हैं। और, परमाणु बिजलीघरों का कचरा...... एक हजार मेगावाट का परमाणु बिजलीघर हर वर्ष 250 किलोग्राम प्लूटोनियम पैदा करता है — 5 किलो प्लूटोनियम एक एटम बम के लिये पर्याप्त है। प्लूटोनियम हजारों वर्ष तक जीवन के लिये घातक रहता है।

अमरीका में नागरिक-समूह यूरेनियम के खनन और परमाणु बिजलीघरों के निर्माण की सरकारी नीति का विरोध कर रहे हैं।

हमारा प्रयास ' मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी
फरीदाबाद — 121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011